IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 2, June 2026 Impact Factor: 8.2

रामचरितमानस में तुलसीदास के संवादों में नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

लीलाधर[1] and डॉ. अमन अहमद[2]
शोधार्थी[1], सहायक प्रोफेसर[2]
हिंदी-विभाग
मोनाड विश्वविद्यालय, हापुड़

सारांश: *भारतीय साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परंपरा में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। यह केवल एक धार्मिक अथवा भक्तिकाव्य ग्रंथ नहीं है, बल्कि भारतीय समाज के नैतिक, सामाजिक, पारिवारिक और मानवीय मूल्यों का व्यापक दस्तावेज भी है। रामचरितमानस में संवादों का विशेष महत्व है, क्योंकि तुलसीदास ने विभिन्न पात्रों के माध्यम से जीवन के आदर्शों, कर्तव्यों, संबंधों और मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्ति प्रदान की है। राम, सीता, भरत, लक्ष्मण, हनुमान, विभीषण, रावण, कैकेयी, दशरथ और अन्य पात्रों के संवादों में सत्य, धर्म, त्याग, करुणा, प्रेम, सेवा, निष्ठा, कर्तव्य, क्षमा, समानता तथा लोकमंगल जैसे नैतिक और मानवीय मूल्य स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। प्रस्तुत समीक्षा लेख में तुलसीदास के संवादों का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए यह विश्लेषण किया गया है कि सकारात्मक एवं नकारात्मक पात्रों के संवादों के माध्यम से नैतिक आदर्शों तथा मानवीय दुर्बलताओं दोनों का चित्रण किस प्रकार किया गया है।*

मुख्य संकेतक: रामचरितमानस, तुलसीदास, संवाद, नैतिक मूल्य, मानवीय मूल्य, धर्म, सत्य, करुणा, सेवा, लोकमंगल।

I. परिचय

गोस्वामी तुलसीदास हिंदी साहित्य के महान भक्तिकालीन कवि एवं समाज-द्रष्टा थे। उनकी महान कृति *रामचरितमानस* भारतीय जनजीवन में केवल धार्मिक ग्रंथ के रूप में ही नहीं, बल्कि नैतिक एवं मानवीय शिक्षा के महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में भी प्रतिष्ठित है। तुलसीदास ने रामकथा को लोकभाषा में प्रस्तुत करके उसे सामान्य जन तक पहुँचाया तथा उसके माध्यम से जीवन के उच्च आदर्शों को स्थापित किया। *रामचरितमानस* में कथा, दर्शन, भक्ति और लोकजीवन का अद्‌भुत समन्वय दिखाई देता है।

ग्रंथ की साहित्यिक विशेषताओं में संवादों का महत्वपूर्ण स्थान है। तुलसीदास के संवाद पात्रों के चरित्र, मनोभाव, नैतिक दृष्टिकोण तथा सामाजिक संबंधों को उद्‌घाटित करते हैं। राम और भरत का संवाद भ्रातृप्रेम एवं त्याग का आदर्श प्रस्तुत करता है, राम और लक्ष्मण के संवाद कर्तव्य तथा सेवा की भावना को व्यक्त करते हैं, सीता के संवाद आत्मसम्मान, निष्ठा और साहस को दर्शाते हैं तथा हनुमान के संवाद सेवा, विनम्रता और समर्पण की भावना को स्थापित करते हैं। इसके विपरीत रावण और मारीच, रावण और विभीषण अथवा कैकेयी और मंथरा के संवाद अहंकार, लोभ, स्वार्थ तथा कुसंगति के परिणामों को सामने लाते हैं।

इस प्रकार तुलसीदास ने संवादों के माध्यम से नैतिक मूल्यों के सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों पक्षों का चित्रण किया है। यही तुलनात्मक दृष्टि *रामचरितमानस* को केवल आदर्शवादी साहित्य नहीं, बल्कि मानवीय मनोविज्ञान का भी महत्वपूर्ण ग्रंथ बनाती है।

II. समीक्षा अध्ययन की पद्धति

प्रस्तुत लेख वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक समीक्षा पद्धति पर आधारित है। अध्ययन के लिए *रामचरितमानस* के विभिन्न कांडों में उपलब्ध प्रमुख संवादों का चयन किया गया है। चयनित संवादों का विषयवस्तु विश्लेषण करते हुए उनमें निहित नैतिक तथा मानवीय मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन में प्राथमिक स्रोत के रूप में *रामचरितमानस* तथा द्वितीयक स्रोतों के रूप में तुलसीदास, रामकथा, भारतीय संस्कृति, नैतिक दर्शन एवं हिंदी साहित्य से संबंधित आलोचनात्मक पुस्तकों और शोध अध्ययनों का उपयोग किया गया है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 2, June 2026 Impact Factor: 8.2

III. रामचरितमानस में संवादों का साहित्यिक महत्व

रामचरितमानस में संवाद कथा की गति, चरित्र निर्माण तथा विचार अभिव्यक्ति के महत्वपूर्ण माध्यम हैं। तुलसीदास ने प्रत्येक पात्र को उसके स्वभाव और सामाजिक स्थिति के अनुरूप भाषा प्रदान की है। संवादों के माध्यम से पात्रों की आंतरिक चेतना सामने आती है। राम के संवाद मर्यादा, विनम्रता और धर्मबुद्धि से युक्त हैं। भरत के संवाद त्याग और प्रेम से परिपूर्ण हैं। लक्ष्मण के संवाद सक्रियता, वीरता और भ्रातृभक्ति को व्यक्त करते हैं। सीता के संवाद दृढ़ निश्चय और आत्मसम्मान को प्रकट करते हैं। हनुमान के संवाद विनम्रता, बुद्धिमत्ता तथा सेवा की भावना के प्रतीक हैं। दूसरी ओर रावण के संवाद अहंकार और शक्ति के दुरुपयोग को व्यक्त करते हैं।

अतः संवादों की तुलनात्मक संरचना के माध्यम से तुलसीदास ने आदर्श और अनादर्श, विनय और अहंकार, त्याग और स्वार्थ तथा धर्म और अधर्म के बीच स्पष्ट अंतर स्थापित किया है।

IV. राम के संवादों में नैतिक मूल्य

राम *रामचरितमानस* के केंद्रीय आदर्श पात्र हैं। उनके संवादों में सत्य, धर्म, कर्तव्य, करुणा और लोकमंगल की भावना प्रमुख रूप से दिखाई देती है। राम अपने व्यक्तिगत सुख की अपेक्षा पिता के वचन और सामाजिक मर्यादा को अधिक महत्व देते हैं। वनवास के प्रसंग में उनका व्यवहार नैतिक कर्तव्य की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है।

राम का चरित्र यह संदेश देता है कि सत्ता अथवा व्यक्तिगत सुख से अधिक महत्वपूर्ण नैतिक दायित्व है। उनके संवादों में विरोधी के प्रति भी सम्मान और करुणा दिखाई देती है। विभीषण को शरण देने का प्रसंग उनकी मानवीय दृष्टि का श्रेष्ठ उदाहरण है। राम शरणागत की रक्षा को धर्म का महत्वपूर्ण अंग मानते हैं।

इस प्रकार राम के संवाद आदर्श नेतृत्व, नैतिक शासन और मानवता की भावना को स्थापित करते हैं।

V. भरत और राम के संवादों में त्याग एवं भ्रातृप्रेम

राम और भरत के संबंध *रामचरितमानस* में मानवीय मूल्यों की सर्वोच्च अभिव्यक्ति हैं। भरत राज्य को स्वीकार करने के बजाय राम को अयोध्या वापस लाने के लिए चित्रकूट जाते हैं। उनके संवाद सत्ता-लालसा के स्थान पर प्रेम और त्याग की भावना प्रस्तुत करते हैं। राम और भरत दोनों के संवादों में व्यक्तिगत अधिकार से अधिक पारिवारिक और नैतिक दायित्व को महत्व दिया गया है। राम पिता की आज्ञा के कारण वनवास स्वीकार करते हैं, जबकि भरत अन्यायपूर्वक प्राप्त राज्य को स्वीकार नहीं करते।

यह संवाद आधुनिक समाज में पारिवारिक संबंधों के लिए भी महत्वपूर्ण संदेश देता है कि वास्तविक संबंध प्रतिस्पर्धा और स्वार्थ पर नहीं, बल्कि विश्वास, सम्मान और त्याग पर आधारित होने चाहिए।

VI. लक्ष्मण के संवादों में सेवा, निष्ठा और कर्तव्य

लक्ष्मण के संवादों में राम के प्रति अटूट निष्ठा दिखाई देती है। वे अपने व्यक्तिगत जीवन और सुख-सुविधाओं का त्याग करके राम के साथ वन जाते हैं। लक्ष्मण का चरित्र सक्रिय सेवा और कर्तव्यपरायणता का उदाहरण है।

हालाँकि लक्ष्मण का स्वभाव कभी-कभी तीव्र और भावनात्मक दिखाई देता है, फिर भी उनके संवादों में धर्म और न्याय के प्रति गहरी निष्ठा है। राम की तुलना में लक्ष्मण अधिक भावुक एवं उग्र हैं, जबकि राम शांत और संतुलित हैं। यह तुलनात्मक अंतर मानव व्यक्तित्व की विविधता को प्रकट करता है।

तुलसीदास इस माध्यम से यह संदेश देते हैं कि मानव स्वभाव भिन्न हो सकता है, लेकिन उसका अंतिम लक्ष्य धर्म, न्याय और सेवा होना चाहिए।

VII. सीता के संवादों में आत्मसम्मान और मानवीय गरिमा

सीता *रामचरितमानस* की प्रमुख महिला पात्र हैं। उनके संवादों में प्रेम, निष्ठा, साहस और आत्मसम्मान का समन्वय दिखाई देता है। वनवास के समय राम के साथ जाने का उनका निर्णय केवल पत्नी-धर्म का प्रतीक नहीं है, बल्कि उनके स्वतंत्र निर्णय और दृढ़ व्यक्तित्व को भी व्यक्त करता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 2, June 2026 Impact Factor: 8.2

सीता कठिन परिस्थितियों में भी अपने नैतिक मूल्यों को नहीं छोड़तीं। रावण के समक्ष उनका दृढ़ व्यवहार मानवीय गरिमा और नैतिक साहस का उदाहरण है। उनके संवाद बताते हैं कि परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी कठिन हों, व्यक्ति को अपने आत्मसम्मान और नैतिक विश्वास की रक्षा करनी चाहिए।

राम और सीता के संवादों की तुलना करने पर स्पष्ट होता है कि दोनों का व्यक्तित्व अलग होते हुए भी उनके मूल मूल्य सत्य, निष्ठा और धर्म से जुड़े हैं।

VIII. हनुमान के संवादों में सेवा और विनम्रता

हनुमान *रामचरितमानस* में सेवा और समर्पण के आदर्श हैं। उनके संवादों में ज्ञान, शक्ति और विनम्रता का संतुलन दिखाई देता है। वे अत्यंत शक्तिशाली होने के बावजूद अपने कार्यों का श्रेय स्वयं नहीं लेते।

राम और हनुमान के संबंध स्वामी और सेवक के पारंपरिक संबंध से आगे बढ़कर विश्वास, प्रेम और समर्पण का मानवीय आदर्श प्रस्तुत करते हैं। हनुमान का व्यक्तित्व यह सिद्ध करता है कि वास्तविक महानता शक्ति के प्रदर्शन में नहीं, बल्कि शक्ति के लोकहितकारी उपयोग में है।

उनके संवाद आज के नेतृत्व और सेवा क्षेत्र के लिए भी महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि वे निःस्वार्थ सेवा, उत्तरदायित्व और विनम्रता की प्रेरणा देते हैं।

IX. विभीषण और रावण के संवादों का तुलनात्मक अध्ययन

विभीषण और रावण के संवाद नैतिकता तथा अनैतिकता के संघर्ष को प्रस्तुत करते हैं। विभीषण रावण को सत्य और धर्म के मार्ग पर चलने की सलाह देते हैं, जबकि रावण अपने अहंकार और शक्ति के कारण उचित परामर्श को स्वीकार नहीं करता।

विभीषण का दृष्टिकोण विवेक और नैतिक चेतना पर आधारित है, जबकि रावण का दृष्टिकोण सत्ता, अहंकार और स्वार्थ पर आधारित है। इस संवाद से स्पष्ट होता है कि बुद्धिमत्ता केवल ज्ञान रखने में नहीं, बल्कि उचित सलाह को स्वीकार करने में भी है।

यह प्रसंग आधुनिक नेतृत्व के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक है। जो नेतृत्व आलोचना और सत्य को स्वीकार नहीं करता, वह अंततः विनाश की ओर अग्रसर हो सकता है।

X. रावण के संवादों में अहंकार और मानवीय दुर्बलता

रावण एक जटिल व्यक्तित्व है। वह ज्ञानवान और शक्तिशाली होने के बावजूद अहंकार और स्वार्थ का शिकार है। उसके संवादों में शक्ति के प्रति अत्यधिक विश्वास तथा नैतिक मर्यादाओं की उपेक्षा दिखाई देती है।

रावण के संवाद तुलसीदास की नैतिक दृष्टि में नकारात्मक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। उसके माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि केवल विद्या और शक्ति व्यक्ति को महान नहीं बनाती। यदि उसके साथ विनम्रता, विवेक और नैतिकता न हो तो वही शक्ति विनाश का कारण बन सकती है।

राम और रावण के संवादात्मक दृष्टिकोण की तुलना करने पर राम का चरित्र मर्यादा और लोककल्याण का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि रावण का चरित्र अहंकार और स्वार्थ का।

तालिका 1: प्रमुख पात्रों के संवादों में नैतिक एवं मानवीय मूल्य

पात्र	संवादों की प्रमुख विशेषता	नैतिक मूल्य	मानवीय मूल्य
राम	मर्यादित एवं संतुलित	सत्य, धर्म, कर्तव्य	करुणा, क्षमा
सीता	दृढ़ एवं आत्मसम्मानपूर्ण	निष्ठा, साहस	गरिमा, संवेदना
भरत	त्यागपूर्ण	त्याग, सत्यनिष्ठा	भ्रातृप्रेम, विनम्रता
लक्ष्मण	सक्रिय एवं भावनात्मक	निष्ठा, कर्तव्य	सेवा, समर्पण
हनुमान	विनम्र एवं बुद्धिमत्तापूर्ण	सेवा, निष्ठा	प्रेम, सहयोग
विभीषण	विवेकपूर्ण	सत्य, न्याय	हितचिंतन

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, June 2026
Impact Factor: 8.2

रावण	अहंकारपूर्ण	नैतिक पतन	मानवीय दुर्बलता
कैकेयी	स्वार्थ से प्रभावित	कर्तव्य-संघर्ष	मोह एवं भावनात्मक द्वंद्व

XI. कैकेयी और मंथरा के संवादों में कुसंगति एवं स्वार्थ

कैकेयी और मंथरा का संवाद नैतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। मंथरा के प्रभाव में कैकेयी की मानसिकता परिवर्तित होती है और वह व्यक्तिगत स्वार्थ तथा मोह के कारण ऐसे निर्णय लेती है जिनका परिणाम पूरे परिवार और राज्य को भुगतना पड़ता है।

इस संवाद से कुसंगति, संकीर्ण सोच और स्वार्थपूर्ण परामर्श के नकारात्मक प्रभाव का पता चलता है। तुलसीदास यह संकेत देते हैं कि व्यक्ति के निर्णयों पर संगति और सलाह का गहरा प्रभाव पड़ता है।

राम और भरत के संवादों की तुलना में कैकेयी और मंथरा का संवाद स्वार्थ एवं भ्रम की दिशा प्रस्तुत करता है। इस प्रकार संवादों के माध्यम से नैतिक और अनैतिक दृष्टिकोणों का स्पष्ट विरोध स्थापित किया गया है।

XII. तुलसीदास के संवादों में करुणा का मानवीय मूल्य

करुणा *रामचरितमानस* के महत्वपूर्ण मानवीय मूल्यों में से एक है। राम के व्यवहार में शत्रु और शरणागत दोनों के प्रति करुणा दिखाई देती है। विभीषण को शरण देने का निर्णय मानवता की व्यापक अवधारणा प्रस्तुत करता है।

तुलसीदास के अनुसार वास्तविक धर्म केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है, बल्कि दूसरों के दुःख को समझने और उनकी सहायता करने में भी निहित है। संवादों के माध्यम से करुणा को सामाजिक संबंधों का आधार बनाया गया है।

XIII. सत्य और धर्म का तुलनात्मक स्वरूप

राम के संवादों में सत्य और धर्म परस्पर जुड़े हुए हैं। उनके लिए धर्म केवल नियमों का पालन नहीं, बल्कि परिस्थितियों के अनुसार न्यायपूर्ण और लोकहितकारी निर्णय लेना भी है। इसके विपरीत रावण और अन्य नकारात्मक पात्र व्यक्तिगत हित को सर्वोच्च मानते हैं।

इस तुलनात्मक दृष्टि से स्पष्ट होता है कि तुलसीदास के लिए नैतिकता बाहरी आचरण मात्र नहीं, बल्कि आंतरिक चेतना का विषय है।

तालिका 2: सकारात्मक एवं नकारात्मक संवादों का तुलनात्मक विश्लेषण

तुलनात्मक आधार	सकारात्मक पात्रों के संवाद	नकारात्मक पात्रों के संवाद
उद्देश्य	लोकमंगल एवं धर्म	स्वार्थ एवं व्यक्तिगत लाभ
भाषा	विनम्र एवं मर्यादित	अहंकारपूर्ण एवं उत्तेजक
निर्णय	विवेकपूर्ण	भावनात्मक या स्वार्थपूर्ण
संबंध	प्रेम एवं विश्वास	संदेह एवं नियंत्रण
परिणाम	सामाजिक सद्भाव	संघर्ष एवं विनाश
प्रमुख मूल्य	त्याग, सेवा, सत्य	अहंकार, लोभ, मोह

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/568

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, June 2026
Impact Factor: 8.2

मानवीय दृष्टि	करुणा एवं सहयोग	स्वार्थ एवं प्रभुत्व

XIV. पारिवारिक मूल्यों का चित्रण

रामचरितमानस के संवाद भारतीय परिवार व्यवस्था के विभिन्न आदर्शों को प्रस्तुत करते हैं। राम और दशरथ के संबंध में आज्ञापालन, राम और भरत के संबंध में भ्रातृप्रेम, राम और सीता के संबंध में निष्ठा तथा लक्ष्मण के व्यवहार में सेवा का आदर्श दिखाई देता है। तुलसीदास परिवार को केवल रक्त संबंधों का समूह नहीं मानते, बल्कि नैतिक जिम्मेदारियों की संस्था के रूप में प्रस्तुत करते हैं। संवादों के माध्यम से पारिवारिक संबंधों में सम्मान, त्याग और विश्वास के महत्व को स्थापित किया गया है।

XV. सामाजिक एवं राजनीतिक मूल्यों का चित्रण

राम के संवादों में आदर्श शासन की अवधारणा भी दिखाई देती है। शासन का उद्देश्य व्यक्तिगत सत्ता का विस्तार नहीं, बल्कि जनता का कल्याण होना चाहिए। रामराज्य की अवधारणा सामाजिक न्याय, सुरक्षा और लोककल्याण से जुड़ी है।
रावण के शासन की तुलना में राम की राजनीतिक दृष्टि नैतिक नेतृत्व पर आधारित है। रावण शक्ति और नियंत्रण को प्राथमिकता देता है, जबकि राम न्याय और जनकल्याण को।

XVI. स्त्री-पुरुष संबंधों में मानवीय मूल्य

राम और सीता के संवाद पारस्परिक निष्ठा तथा संबंधों की जटिलता को प्रस्तुत करते हैं। सीता का व्यक्तित्व केवल पारंपरिक स्त्री-भूमिका तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें निर्णय क्षमता, साहस और आत्मसम्मान भी दिखाई देता है।
तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो *रामचरितमानस* में स्त्री पात्रों के माध्यम से विभिन्न मानवीय स्थितियों का चित्रण हुआ है। सीता निष्ठा और धैर्य का प्रतीक हैं, कैकेयी मोह और निर्णयगत संघर्ष का, जबकि मंथरा नकारात्मक प्रभाव का प्रतिनिधित्व करती है।

XVII. तुलसीदास के संवादों में लोकमंगल की अवधारणा

तुलसीदास की साहित्यिक दृष्टि का प्रमुख उद्देश्य लोकमंगल है। उनके संवाद व्यक्तिगत नैतिकता को सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ते हैं। व्यक्ति का आचरण केवल उसके निजी जीवन को प्रभावित नहीं करता, बल्कि परिवार, समाज और राज्य को भी प्रभावित करता है।
राम का त्याग, भरत का त्याग, हनुमान की सेवा और विभीषण की सत्यनिष्ठा सामूहिक कल्याण की दिशा में कार्य करती है। इसके विपरीत रावण, मंथरा और स्वार्थपूर्ण निर्णय सामाजिक संकट उत्पन्न करते हैं।

तालिका 3: प्रमुख संवादों की समकालीन प्रासंगिकता

संवाद/प्रसंग	प्रमुख मूल्य	आधुनिक संदर्भ
राम–भरत	त्याग एवं प्रेम	पारिवारिक सद्भाव
राम–लक्ष्मण	कर्तव्य एवं निष्ठा	सहयोग एवं जिम्मेदारी
राम–हनुमान	सेवा एवं विश्वास	नेतृत्व और टीमवर्क
विभीषण–रावण	सत्य एवं विवेक	नैतिक नेतृत्व
कैकेयी–मंथरा	कुसंगति का प्रभाव	गलत सूचना एवं नकारात्मक प्रभाव
सीता–राम	निष्ठा एवं आत्मसम्मान	संबंधों में सम्मान
राम–विभीषण	शरणागत रक्षा	समावेशिता एवं मानवता

XVIII. समकालीन समाज में प्रासंगिकता

आज का समाज नैतिक संकट, पारिवारिक विघटन, सामाजिक असहिष्णुता और स्वार्थपूर्ण प्रतिस्पर्धा जैसी अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। ऐसे समय में *रामचरितमानस* के संवादों में निहित मूल्य अत्यंत प्रासंगिक हैं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 2, June 2026 Impact Factor: 8.2

राम के संवाद नैतिक नेतृत्व की प्रेरणा देते हैं। भरत के संवाद सत्ता और संपत्ति के प्रति अनासक्ति का संदेश देते हैं। हनुमान के संवाद निःस्वार्थ सेवा की शिक्षा देते हैं। विभीषण का चरित्र सत्य के पक्ष में खड़े होने की प्रेरणा देता है, जबकि रावण के संवाद अहंकार और शक्ति के दुरुपयोग के प्रति चेतावनी प्रदान करते हैं।

इस प्रकार *रामचरितमानस* के संवाद आधुनिक शिक्षा, नेतृत्व, परिवार और सामाजिक जीवन के लिए मूल्यपरक मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

XIX. निष्कर्ष

रामचरितमानस में तुलसीदास के संवाद भारतीय नैतिक और मानवीय चिंतन की समृद्ध परंपरा को अभिव्यक्त करते हैं। इन संवादों के माध्यम से सत्य, धर्म, त्याग, करुणा, प्रेम, सेवा, निष्ठा, क्षमा, आत्मसम्मान और लोकमंगल जैसे उच्च मूल्यों की स्थापना की गई है। तुलसीदास की विशेषता यह है कि उन्होंने केवल आदर्श पात्रों के माध्यम से नैतिकता का चित्रण नहीं किया, बल्कि रावण, कैकेयी और मंथरा जैसे पात्रों के संवादों द्वारा मानवीय दुर्बलताओं और नैतिक पतन के परिणामों को भी प्रस्तुत किया।

तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सकारात्मक पात्रों के संवाद सहयोग, त्याग और मानवता पर आधारित हैं, जबकि नकारात्मक पात्रों के संवाद स्वार्थ, अहंकार और मोह से प्रभावित हैं। राम और रावण, भरत और कैकेयी, हनुमान और रावण तथा विभीषण और रावण के संवादों के माध्यम से तुलसीदास ने नैतिकता और अनैतिकता के संघर्ष को प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया है।

अंततः कहा जा सकता है कि *रामचरितमानस* के संवाद केवल धार्मिक कथन नहीं हैं, बल्कि वे मानव जीवन के व्यवहारिक, नैतिक और सामाजिक आदर्शों के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। वर्तमान समय में भी तुलसीदास के संवाद नैतिक नेतृत्व, मानवीय संवेदना, पारिवारिक सद्भाव और सामाजिक उत्तरदायित्व की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

संदर्भ

1. तुलसीदास. (2019). *रामचरितमानस*. गीता प्रेस।
2. शुक्ल, र. (2018). *हिंदी साहित्य का इतिहास*. लोकभारती प्रकाशन।
3. द्विवेदी, ह. (2016). *हिंदी साहित्य की भूमिका*. राजकमल प्रकाशन।
4. वर्मा, र. (2017). *हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास*. राजपाल एंड संस।
5. मिश्र, व. (2015). *तुलसीदास और उनका साहित्य*. साहित्य भवन।
6. चतुर्वेदी, प. (2018). *भक्ति आंदोलन और हिंदी साहित्य*. वाणी प्रकाशन।
7. सिंह, न. (2019). *भारतीय संस्कृति और साहित्य*. प्रभात प्रकाशन।
8. शर्मा, र. (2020). *रामकथा की सांस्कृतिक परंपरा*. भारतीय ज्ञानपीठ।
9. पांडेय, क. (2017). *तुलसी साहित्य का सामाजिक दर्शन*. लोकभारती।
10. गुप्त, म. (2018). *रामचरितमानस का सांस्कृतिक अध्ययन*. साहित्य अकादमी।
11. त्रिपाठी, र. (2016). *भारतीय नैतिक चिंतन*. वाणी प्रकाशन।
12. तिवारी, र. (2021). *तुलसीदास का लोकमंगल दर्शन*. राजकमल प्रकाशन।
13. यादव, स. (2019). *भक्ति साहित्य और मानवीय मूल्य*. साहित्य सदन।
14. पांडेय, व. (2020). *रामचरितमानस में जीवन मूल्य*. हिंदी साहित्य परिषद।
15. मिश्रा, अ. (2018). *तुलसी साहित्य में मानवतावाद*. लोकभारती प्रकाशन।